* उपसंहार *

उपसंहार

साठोत्तरी एवं अधुनातन लेखिकाओं में मृणाल पांडेजी का साहित्यिक योगदान कथासाहित्य में अनूठा स्थान रखता है। साहित्य पर हुआ व्यक्तित्व का प्रतिफलन ही लेखक की साहित्यिक पहचान निश्चित करता है। यह सत्य मृणाल पांडे जी के साहित्य पर हुए व्यक्तित्व की अनूठी छाप से सिध्द होता है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन से प्राप्त हुए निष्कर्षाप्रत पहलुओं से स्पष्ट होता है कि उनका व्यक्तित्व जिज्ञासू, अध्ययनशील, हँसोड, कलाप्रेमी, स्वाभिमानी, साहसी, परंपरा और आधुनिकता का समन्वयक, व्यक्ति मन का चितेरा, यथार्थ का हिमायती और समाज-सुधार की आत्मीय मनोभावना से ओतप्रोत है। मृणालजी का जन्म सुखी, संपन्न परिवार में होने से तथा शिक्षा और नौकरी के कारण वह देश-विदेश के विभिन्न जन-जीवन से परिचित हो सकी है। इस अनुभव से जुड़ी घटनाओं का चित्रण उनकी कहानियों में परिलक्षित होता है।

मृणालजी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न हिंदी साहित्यकार के रूप में सिद्ध हुई है। उन्होंने हिंदी और अंग्रेजी भाषा के विभिन्न विधाओं में साहित्य-सृजन किया है। उनके कहानी साहित्य के समग्र मूल्यांकन से ज्ञात होता है कि वर्तमान भारत में मानवीयता की प्रतिष्ठापना उनके साहित्य का उद्देश्य रहा है। लेखिकाने समाज में स्थित विविध समस्याओं को पाठकों के सन्मुख लाने का प्रयास भी किया है। साठोत्तरी हिंदी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनानेवाली मृणालजी अब तक के अपने जीवन में अनेक सम्मान एवं पुरस्कारों से सम्मानित तथा पुरस्कृत हो चुकी है। उनके तथा उनकी कृतियों को जो सम्मान प्राप्त हुए है वे उनके गरिमामय व्यक्तित्व एवं कृतित्व की साक्ष्य देते है।

मृणालजी के 'यानी कि एक बात थी', 'बचूली चौकीदारिन की कढ़ी', 'चार दिन की जवानी तेरी' आदि तीन कहानीसंग्रहों के कथ्य से स्पष्ट होता है कि उनकी अधिकतर कहानियों के परिवार में टूटन दिखाई देती हैं तथा अधिकांश कहानियों में नारी केंद्र में है क्योंकि आज भी समाज में नारी

किसप्रकार शोषण का शिकार हो रही है, इसका यथार्थ दस्तावेज मिलता है, साथ ही समाज में व्याप्त अनेक समस्याओं को भी उन्होंने अपनी कहानियों का विषय बनाया है। उनकी कहानियों के चरित्रों में कथावस्तु का उद्‌घाटन करने तथा उसके उद्‌देश्य की पूर्ति करने की पूर्ण क्षमता परिलक्षित होती है। चरित्र को विकसित करने तथा कथावस्तु को गति देने की पूर्ण क्षमता संवादों में है। मृणालजी ने देश-काल तथा वातावरण निर्मिति में तत्कालिन भारत की सामाजिक समस्या को समाज के सम्मुख रखा है। उनकी कहानियाँ अपनी सरल सीधी भाषा, अपने ताजेपन और विषयों की विविधता के कारण आकर्षित करती है। उन्होंने भाषा को अत्यंत सजग रूप से तराशा है। यदि पहाड़ की कहानियों में उनकी भाषा में सहजता दिखाई देती है तो शहरी-जीवन की कहानियों में इस भाषा का धारदार व्यंग्य दिखाई देता है। निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि-कथ्य की गहरी पकड़, समर्थ भाषाभिव्यक्ति और शिल्प की ताजगी के कारण महत्वपूर्ण स्थान रखती है। साथ ही कथ्य के माध्यम से पारिवारिक, नारी और समाज से संबंधित समस्याओं को भी उद्‌घाटित किया है।

भारतीय समाज जीवन में 'परिवार संस्था' का विशेष महत्व है। रूढ़ि, परंपरा, कानून और धार्मिक विश्वासों से परिवार से भिन्न है। व्यक्तिवादी विचारप्रणाली का विकास, नयी अर्थव्यवस्था, औदयोगिकीकरण, भौतिकवादी युग का प्रभाव, नये अधिनियम, शिक्षा प्रसार, विचारधारा और मान्यताओं तथा जीवनमूल्यों में आ रहे परिवर्तनों के कारण परिवार संस्था की नींव हिल गई है। मृणालजी ने कहानियों के माध्यम से पारिवारिक जीवन में सबसे बड़ी समस्या है - पारिवारिक विघटन की समस्या। इसके अंतर्गत संयुक्त परिवार, केंद्रीय परिवार और दांपत्य संबंधों की विघटन की समस्या आदि समस्याएँ आती है। संयुक्त परिवार में सभी रिश्ते-नाते सिर्फ स्वार्थ पर टिके हुए है। इसका यथार्थ चित्रण उनकी 'कैंसर', 'दुर्घटना', 'गर्मियाँ', 'कौवे', 'एक स्त्री का विदा गीत' आदि कहानी में मिलता है। संयुक्त परिवार के संबंधों में कही वृद्‌ध की गरिमामय आत्मनिर्भरता उजागर होती है तो कही नई पीढ़ी की हिसाबी लालसाप्रिय स्वार्थी

वृत्ति जिसके कारण माता-पिता-संतान के रहते भी एकाकी बन जाते हैं। आपसी संबंधों का यह परिवर्तन सास-बहु, भाभी-ननंद, देवरानी-जेठानी आदि संबंधों में भी परिलक्षित होता है। जिससे संयुक्त परिवार में विघटन की समस्या दिखाई देती हैं।

संयुक्त परिवार के साथ-साथ केंद्रीय परिवार भी विघटित हो रहे है। आधुनिक शिक्षा-दीक्षा पाश्चात्य सभ्यता के परिणामस्वरूप नई पीढ़ी को माता-पिता का उनकी जिंदगी में हस्तक्षेप पसंद नहीं जिससे केंद्रीय परिवार विघटित हो रहे है। माता-पिता-संतान इनके निस्वार्थ प्रेम में भी कभी कभी आर्थिक स्थितियाँ आड़े आकर उनकी प्रेम की गहराई और पवित्रता पर प्रश्नचिन्ह लगा देती है। लेखिकाने दांपत्य की बदली हुई मान्यताएँ, संवेदनाएँ और प्रतिक्रियाएँ आदि को गहराई से चित्रित किया है। पति-पत्नी दोनों की संस्कृति, शिक्षा-दीक्षा और रहन-सहन में अगर भिन्नता हो तो दांपत्य संबंधों में दरार पड़ती है। जैसे 'कौवे', 'कगार पर' कहानी में दिखाई देता है। लेखिका ने स्त्री-पुरूष संबंधों का प्रामाणिक चित्रण किया है। दांपत्य संबंध की सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्थितियों को भी लेखिकाने सफलता से रूपायित किया है। पारिवारिक विघटन से अकेलेपन की समस्या निर्माण होती है। आज का मनुष्य मशीन बन गया है। इससे वह अपने आप को अकेला समझता है। इस अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए मनुष्य आत्महत्या भी करता है इसका उदा. है 'कगार पर' कहानी का 'विशू'। वर्तमान युग में अविवाह की समस्या स्त्री एवं पुरूष दोनों के लिए निर्माण हो रही है, जिसका चित्रण 'दरम्यान' कहानी में किया है पारिवारिक झिम्मेदारी के कारण इस कहानी का 'मनोहर' विवाह नहीं कर पाता। लेखिका ने इसी समस्या को भी सूक्ष्मता से चित्रित किया है। इन समस्याओं के साथ पारिवारिक जीवन में अर्थाभाव की समस्या भी दिखाई देती है। 'अर्थ' का विशेष महत्व होने से आपसी प्रेम, स्नेह, ममता आदि उदात्त भावनाओं के स्थान पर ईर्ष्या, द्वेष, असंतोष, स्वार्थ, नफरत की भावना पनपने लगी है। अतः परिवार टूट रहे है।

लेखिका ने पारिवारिक समस्या के साथ-साथ नारी संबंधी अन्य वर्तमान समस्याओं को भी उद्घाटित किया है। जैसे-अविवाह, अनमेल विवाह, प्रेमविवाह, स्त्री का विवाहपूर्व आकर्षण, कुरूपता, विधवा नारी की समस्या, नारीशोषण, नारी की पराधीनता, अकेलेपन, तथा कामकाजी नारी की समस्या आदि लेखिकाने पीड़ित अविवाहित नारी की मानसिकता को 'शरण्य की ओर', 'गर्मियाँ','मीटिंग' आदि कहानियों में बेखुबी से चित्रण किया है। अनमेल विवाह को हेय दृष्टि से देखा जाता है इसलिए लेखिकाने अनमेल विवाह के दुष्परिणामों का यथार्थ चित्रण 'हमसफर', 'कर्कशा', 'एक पगलाई संस्पेस कथा' आदि कहानियों में किया है। लेखिकाने ज्यादातर प्रेमविवाह की असफलताओं का ही चित्रण'लक्का-सुन्नी', 'पितृदाय' कहानियों में किया है। स्त्री को अपनी कुरूपता के कारण अपमानित होना पडता है। उसकी इसी विवशता का चित्रण 'चिमगादड़े'कहानी के 'मारिया' के माध्यम से किया है। लेखिका ने पुरानी स्मृतियों में घुट-घुटकर मरनेवाली और घर से बाहर निकलकर अर्थ की दृष्टि से स्वावलंबी हो रही दोनों प्रकार की विधवाओं की समस्या का चित्रण किया है। आज भी नारी पैर की जूती समझी जाती है और उसका शोषण किया जाता है, परंतु मृणालजी की कहानियों की नारी इस शोषण का डटकर मुकाबला करती है। साथ ही उन्होंने पराधीन नारी की समस्या को भी चित्रित किया है जो विवश हैं । वर्तमान युग में नारी सबसे ज्यादा अकेलेपन का शिकार हुई है। उसकी इस समस्या को भी 'कोहरा और मँछलियाँ', 'शरण्य की ओर', 'एक पगलाई सस्पेंस कथा', 'अँधेरे से अँधेरे तक', 'रिक्ति', 'धुप-छाँव', 'कर्कशा', 'रूबी', 'चार नंबरी सूनहरी बाग लेन' आदि कहानियों में मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री के लिए अकेलापन एक भयावह मानसिकता है। 'मिटिंग','गर्मियाँ' और 'लेडिज टेलर' आदि कहानियों के माध्यम से अविवाहित कामकाजी नारी की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। आज विवाहित नारी के लिए पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और दफ्तर की जिम्मेदारियाँ सँभालने में कसरत करनी पड़ती है।

लेखिकाने नारी समस्या के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं का चित्रण भी अपनी कहानियों में किया है। कन्या-जन्म की समस्या, तलाक, बेरोजगारी, रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार, मँहगाई, सुविधा से वंचित पहाड़ी लोगों की समस्या, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, अंधविश्वास, मृत्युसंबंधी विकृत प्रथा आदि असंगति-विसंगति, स्वार्थ भ्रष्टाचार आदि समस्याओं ने सामाजिक विकास में बाधाएँ निर्माण की है। इक्कीसवी सदी में भी भारतीय समाज में आज भी कन्या जन्म को अशुभ ही माना जाता है। जिसका परिणाम बेटी के जन्म से लेकर मृत्युतक भुगतना पड़ता है। चाहे वह आगे चलकर बहन-पत्नी माँ या अन्य किसी भी रूप में हो। लेकिन आज की बेटी झुकना नहीं जानती इसका संकेत 'लड़कियाँ' कहानी में मिलता है। नारी स्वातंत्र्य की अभिव्यक्ति से तलाक की समस्या सामने आती है। जिसका दुष्परिणाम, निष्पाप बच्चों पर होता हैं इसका चित्रण 'कौवे','लक्का-सून्नी' कहानी में किया है। जिस देश में बेकारी की समस्या हो, वह देश न केवल आर्थिक दृष्टि से पिछड़ता है बल्कि देश की युवा पीढ़ी निकम्मी तो होती ही है साथ ही अनेक बुराइयों का शिकार होते है। इसका उदा. है - हिर्दा मेयो का मँझला लड़का। आज समाज में सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार व्याप्त है। कोई भी क्षेत्र उससे अछूता नहीं रहा है इसका संकेत 'अब्दुल्ला', 'हिर्दा मेयो का मँझला', 'चार दिन की जवानी तेरी' आदि कहानियों में मिलता है। लेखिकाने नेताओं की सच्चाई का भी पर्दाफाश किया है।

लेखिकाने महानगरीय समस्या के साथ पहाड़ी लोगों की समस्या का भी चित्रण किया है। आज भी पहाड़ी लोग विविध सुविधाओं से वंचित रहते है। इसलिए पहाड़ी युवक महानगर की ओर भाग रहे है। परंतु लेखिका को यह मान्य नहीं है। इसका संकेत 'बीज' कहानी में मिलता है। एक ओर नारी की अशिक्षा उसके लिए समस्या है तो आधुनिका का स्वाँग रचानेवाली नारी भी समाज स्वास्थ्य के लिए समस्या बन गई है इसके साथ ही लेखिकाने समाज में व्याप्त अंधविश्वास तथा मृत्युसंबंधी विकृत प्रथाओं का पर्दाफाश 'मुन्नुचा की अजीब कहानी' के माध्यम से किया है ।

समग्र विवेचन से यही तथ्य प्राप्त होते है कि मृणाल पांडे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है। उनका व्यक्तित्व नई पीढ़ी के लिए प्रेरक एवं आदर्श प्रतीत होता है तथा कृतित्व पाठकों को जीवन जीने की नयी दृष्टि देनेवाला दृष्टिगोचर होता है। लेखिकाने विदेश में परिवार से दूर रहे युवकों की समस्या से अवगत करते हुए विदेश की ओर भाग रही नई पीढ़ी को नई दृष्टि प्रदान की है। उन्होंने केवल नारी समस्या का ही चित्रण नहीं किया है बल्कि जहाँ नारी गलत है वहाँ उसकी गलतियों का एहसास दिलाया है। उन्होंने उच्चवर्ग से लेकर निम्नवर्ग तक याने हर वर्ग की नारी समस्या का विवेचन किया है। उनका जीवन पहाड़ी तथा महानगर दोनों से जुड़ा होने के कारण उन्होंने दोनो से संबंधित समस्याओं का भी चित्रण किया है। साथ ही व्यंग्य के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों का पर्दाफाश किया है। उनका लेखन यथार्थ से जुड़ा हुआ है।

लेखिकाने इन समस्याओं का हल बताने का प्रयास किया है। परिवार संस्था को सुरक्षित रखने के लिए विवेक आवश्यक माना है। लेकिन उनकी मान्यता है कि अपने अधिकार के लिए जरूर लड़ों, पर मर्यादाओं का पालन करते हुए। 'लेखिकाने समाज में व्याप्त बुराइयों का पर्दाफाश करते हुए शहर की ओर भाग रही युवा पीढ़ी रोकने की सलाह दी है। तात्पर्य उनका लेखन यथार्थता से जुड़ा हुआ नारी जगत को मार्गदर्शक-सजग करनेवाला एवं नई पीढ़ी के लिए प्रेरक दृष्टिगोचर होता है।

❋❋❋❋